PGCBHT

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2022

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

Scanned with CamScanner

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2022

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.बी.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2022 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2022 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	**31.03.2022**	**30.09.2022**
एम.टी.टी.-002 बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	**31.03.2022**	**30.09.2022**
एम.टी.टी.–003 बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	**31.03.2022**	**30.09.2022**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यो के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

Scanned with CamScanner

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

Scanned with CamScanner

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ....

नामांकन संख्या : ....
नाम : ....
पता : ....
....

पाठ्यक्रम कोड :...
पाठ्यक्रम का शीर्षक : ....
सत्रीय कार्य कोड : ....
अध्ययन केंद्र का नामः ....

हस्ताक्षर :..
तिथि : ....

---

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। बांग्ला और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

Scanned with CamScanner

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एम.टी.टी–001)

सत्रीय कार्य

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–001
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–001/एएसटी/
(टी.एम.ए.)/2022

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए।

---

1. बहुभाषिकता के हानि–लाभ को लेकर बहस के विविध आयामों पर एक निबंध लिखिए। 10

2. भारतीय भाषाओं की शब्दावली में विद्यमान अर्थपरक असमानताओं पर विस्तृत चर्चा कीजिए। 10

3. भाषा–परिवार से आप क्या समझते हैं? भारत के प्रमुख भाषा–परिवारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए। 10

4. ध्वनि और वर्ण का अर्थ स्पष्ट करते हुए अनुवाद में वर्णमाला का महत्व सिद्ध कीजिए। 10

5. भारतीय भाषाओं की वाक्य रचना की समानताओं और असमानताओं पर अनुवाद की दृष्टि से विचार कीजिए। 10

6. बहुभाषिक समाज में अनुवाद के विविध क्षेत्रों पर प्रकाश डालिए। 10

7. प्रकृति के आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10

8. मशीनी अनुवाद की संकल्पना स्पष्ट करते हुए मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया एवं विधियों की चर्चा कीजिए। 10

9. 'सामाजिक–सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अनुवाद में पुनःसृजन' पर एक निबंध लिखिए। 10

10. निम्नलिखित पर लगभग 250–250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

    (क) आशु अनुवाद की आंतरिक प्रक्रिया

    (ख) अनुवाद का पुनरीक्षण

Scanned with CamScanner

बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.–002)
(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–002
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–002/एएसटी/(टी.एम.ए)/2022

अधिकतम अंक : 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए — 10x2

1- बांग्ला और हिंदी में क्या भाषिक समानताएं हैं, उदाहरण सहित बताएं।

अथवा

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर स्पष्ट करते हुए बांग्ला और हिंदी की लोकोक्तियों में समानता और भिन्नता स्पष्ट करें।

2- हिंदी और बांग्ला में अनुवाद की परंपरा के बारे में समझाएं।

अथवा

बांग्ला और हिंदी में व्याकरणिक शब्दभेद स्पष्ट करें।

3- निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखें। — 10

কাছে	চোখ	বুক	বাঁশ	গোঁফ
লেঠেল	কাপড়	গাছ	ফোস্কা	জায়গা
ছাইট	পুকুর	ঠিকানা	হাতুড়ী	পুতুল
ঠাকুরঝি	দাদা	বয়স্ত	ঘুম	রাগ

4- निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखें। — 10

चांद	पचपन	जाना	सफेद	चम्मच
कितना	कहो	पैदल	शर्म	छोटा

Scanned with CamScanner

बच्चा	आग	चेहरा	गुस्सा	पानी
बाल	सवेरे	अध्यक्ष	सफलता	गीत

5- निम्नलिखित बांग्ला वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

(क) অমিত বাড়ী যাবে না।

(ख) এ সব আমি পছন্দ করি না।

(ग) পথে আমার কোনো কষ্ট হয়নি।

(घ) সে নিজের বাড়ী চলে গেলো।

(च) আজকে শহরে ধর্মঘট, এঈজন্য সব য়াতায়াত বন্দ।

(छ) উর সংগে আমার আলাপ নেহট কিন্তু উ আমার ওর বিয়েতে নিমন্ত্রণ করেছে।

(ज) যে লোকটা চুরী করেছিল, ও ধরা পড়েছে।

(झ) তিনি খুব বিখ্য়াত নাকি।

(ट) খুব হেঁটেছি বলে পাযে খূব কষ্ট।

(ठ) উনি এত বুদ্ধিমান যে বলতে পারি না।

6- निम्नलिखित हिंदी वाक्यों का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 10

(क) तुम्हारे हाथ में क्या है।
(ख) अब तुम कैसे हो।
(ग) अखिलेश शायद अब तक घर पहुंच गया होगा।
(घ) जहां मुझे जाना है, वहां तक कोई बस नहीं जाती।
(च) हैरी पॉटर बच्चों में बहुत लोकप्रिय है।
(छ) अब और नहीं चला जा रहा।
(ज) अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा।
(झ) तुम्हारा हालचाल पूछने के लिए इधर चला आया।
(ट) हर बात को हल्के ढंग से लेना ठीक नहीं।
(ठ) अब फिर कब मुलाकात होगी।

Scanned with CamScanner

7- निम्नलिखित बांग्ला पद्यांशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10x2

(क) শেষ পর্যন্ত মা মারা গেল। চন্দন তখন হটটর্ট বাহটপাসে। গাড়ী চলাচ্ছিল চৌধুরীদা। দাদার বংধু। ছোটটবেলার। পুরনো পাড়াতেহট থাকে। লাল সিগনলে একটটা ঝাঁকুনী দিয়ে গাড়ীটটা থামার সঙ্গে সঙ্গেহট ফোনটটা বাজলো। দীপূর ফোন। দীপু বলেছিল, 'দাদা আর বা... যেতে হবে না। মম্‌স গ্রেস-এ চলে আয়। মা আর নেহট। এখানথেকেহট আমরা কেবড়াতলায় যাব।'

খবর শোনার পরহট চন্দন, এহট যন্ত্রমুগ্ধ চন্দন, কেমন যেন মন্ত্রবদ্ধ ঝিমিয়ে পড়েছিল। এতখন শরীরে জেটট লঅ্যাগ-এর ধকল, অনিদ্রা আর অনভ্যস্ত আহারের ক্লান্তি ছিল। মনে ছিল কলকাতার কাজ আর ফিরে যাবার হিসেবে উপর। মুহূর্তে স্নায়ুগুলো যেন টটানটটান হয়ে উঠল। একটটা ফাঁক শূন্য চেতনার পরদা ছড়িয়ে পড়ল মনের ওপর। বলল, চৌধুরীদা, আর বাড়ী য়েতে হবে না। হসপিটটলে চলো।

স্টিয়রিংয়ে হাত রেখে চৌধুরীদা বললেন, মারা গেছেন?

হঅ্যাঁ।

মম্‌স গ্রেস। মায়ের আশীবাদ। শেষ পর্যন্ত ওরা তাহলে মায়ের আশীর্বাদ-এহট নিয়ে গিয়েছিলো ম াকে। ভাল লাগলো চন্দনের। এহট নর্সিংগহোমে অনেক সুবিধে ... ভাল পরিসেবা পাবা য়ায। বিভিন্ন উষুধপত্রত্রত্র আর ব্লিচিংয়ের গন্ধ এখানে নেহট। অনেকটটা লম্বা লেন, স্ট্রেচারের ওপর শুয়ে আছেন বাসন্তী দেবী।

চন্দন সামনে এসে দাঁড়াতে, মূখের ওপর থেকে সাদা কাপড়টটা সাবধানে নামিয়ে দিল দীপূ। ফরসা ম ুখ, ছোটট করে চুল কাটটা, চোখের নিচ থেকে গলা পর্যন্ত বলিরেখা, সবহট ঠিক আছে।

(ख) গিরিবালা স্বপ্ন দেখেছিলঃ

ভূষন এসেছে। খবর নেহট, বার্তা নেহট, ছূটট করে এসে গেলো ভূষন। এসেছে ছোট্টূ ঘোড়ায। মালকোঁচা মেরে ধূতি পরেছে। পিরেনটটা ধূতির ভিতর গোঁজা। তার উপর বূক-খোলা আলপাকার কোটট। কোটেটর ভিতর-পকেটট থেকে স্টেটথিস্কোপের হলদে ডান্ডির উপর বসা... দাঁতের মুখ দূটেটা উঁকি মারছে। পাযে গার্ডার-দেওযা মোজা আর ডার্বি জূতো আর মাথায সোলার হঅ্যাটটটুটপি। নতুন কেনা ঘোড়ার জিনের এক পাশে কালো একটটা বাক্সটটা আংটটায় ঝোলানো। গিরিবালা চিনল, ওটটা ভূষনের চিরসঙ্গী হোমিওপঅ্যাথী ওষূধের বঅ্যাক্সটটা। কিন্তু জিনের ওপাশে চকচক করছে ওটটা কি। গিরিবালা আশ্চর্য হলো। ঠাহর করে চেযে দেখলে, ওটটা সাহটনবোর্ড। নতূন লেখা রূপালী আর সোনালী অক্ষরগুলোয় রোদ

Scanned with CamScanner

পড়ে চিকচিক করছে। আর্ত কল্যাণ দাতব্য় চিকিৎসালয়। কলিকাতা কলেজের পাস-করা, গোল্ডমেডেলপ্রাপ্ত, ভূতপূর্ব হাউস ফিজিশিয়ান ডাঃ ভূষনচন্দ্র বসু, এম.বী. (হোমিও)। সাইনবোর্ডটা বাংলায় লেখা, তাইট গিরিবালা পড়তে অসুবিধা হল না। কিন্তু গিরিবালার বিদ্যায় সব কথার মানে বুঝতে পারল না।

তবে এইট সব সাইনবোর্ড তো সচরাচর দোকানেইট টাঙানো থাকে। অন্তত গিরিবালা তো তাইট দেখে এসেছে বরাবর। ঘোড়ার পিঠে আবার সাইনবোর্ড ঝোলায় কে। তাও শ্বশূরবাড়ি আসাবার সময়। না না, শ্বশুরবাড়ীতে বিজ্ঞাপন দিতে আসে নি ভূষণ। ঝিনেদার এক চিত্রত্রালয়ের মালিকের কঠিন অসূধ হয়েছিল, ভূষণে চিকিৎসায় ভাল হয়ে উঠছে, পয়সাকড়ি দিতে দিয়ে যাবেন ডাক্তারকে, ভলবেসে সাইনবোর্ডখানা লিখে দিয়েছে। পাঁচখানে গ্রামের মধ্যে দিয়ে যাবেন ডাক্তরবাবু। দেখূক না লোকে।

8- निम्नलिखित हिंदी वाक्यांश का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। **10**

पलटू प्रसाद बचपन से परेशान रहे हैं, अपने नाम को लेकर। स्कूल में सहपाठियों से लेकर टीचर तक उन्हें पलटू बुलाते। हमउम्र उसमें निखट्टू और जोड़ देते। पलटू को लगता कि सब राष्ट्रीय साजिश के अंतर्गत उसका मजाक उड़ा रहे हैं। हर बच्चा अपने मां-बाप को कोसता है। इसीलिए कहा जाता है कि बच्चे देश का भविष्य हैं। शायद अ पने माता-पिता की गलती न दोहराएं। पलटू अक्सर कोसने की हकत दोहराते। दुनिया में इतने नाम हैं, फिर यह पलटू ही क्यों। जब उनका जन्म हुआ था, तब व पन्ने पलटने के काबिल भी न थे। खुद भी अपने आप को कहां [illegible] पाते होंगे। दुबले-पतले पलटू दूसरे को क्या पलटते।

उन्हें साथियों के उपहास पर गुस्सा आता। दिल में होता कि एकाध हाथ जड़ दें, पर मन मसोस कर रह जाते। क्या करें। पिटने से भला चुप रहना है। अहिंसा कमजोर की ताकत है। वह सबको बताते हैं कि उन्हें मार-पीट से चिढ़ है। फरेब इन्सानी व्यक्तित व का आभूषण है। कुछ भी कह दो, कोई यकीन करे न करे।

वे अक्सर मनाते कि उनको सताने वालों के हाथ-पैर टूटें। कभी सड़क पार करते वक्त कार उन्हें कुचले, नहीं कम-से-कम टक्कर तो मार ही दे। इम्तिहान में नकल करना तो सामान्य प्रक्रिया है। कुछ हो कि ये दुष्कर्मी पकड़े जाएं। उन्हें सजा मिले। उन्होंने मास्टरों को अपनी बद्दुआओं से बख्श रखा था। उन बेचारों का क्या कसूर। वे तो उनका नाम ही पुकारते हैं। असली अपराधी तो उनके मां-बाप हैं।

Scanned with CamScanner

9- निम्नलिखित मुहावरों/ लोकोक्तियों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

তিন হাত চাদর দিয়ে কি চার হাত বিছানা ঢাকা যায়।

জলে বাস করে কুমীরের সংগে বিবাদ।

দুধ দেয় যে গরু তার লাথিও ভাল।

ছুঁচো মারা হাত গন্ধ করা।

ওঠ ছোড়ি তোর বিয়ে।

কত ধানে কত চাল জানে না তো।

কোথায় রাজা ভোজ আর কোথায় গংগারাম তেলী।

কুওর বেঁংঙ।

উল্টেট চোর গেরস্থকে বাঁধে।

কাটটা ঘায়ে নুনের ছিটেট।

Scanned with CamScanner

बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.–003)

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–003
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–003 / एएसटी / (टी.एम.ए) / 2022

अधिकतम अंक : 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए 10

1- भारत में भाषाई विविधता के बारे में बताते हुए यहां अनुवाद की आवश्यकता को रेखांकित कीजिए।

अथवा

बांग्ला से हिंदी या फिर हिंदी से बांग्ला में कविता का अनुवाद करते समय किस तरह की सावधानियों का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

2- निम्नलिखित शब्दों के बांग्ला और हिंदी पर्याय बताते हुए इनका शब्दों में प्रयोग कीजिए। 10

धूप	सत्कार	प्रतिष्ठा	अपवाद	मूल
संपर्क	गोष्ठी	दरबार	स्रोत	अध्यक्ष

3- निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए 5x2

(क)

যেখানে গাছের নিচে
ঘা হেঁচট করে
চোখ রেখে একদৃষ্টে
কালো কালো খোয়া-উঠা পিচে,
সংসারের ভাব দ্বন্দ্ব ভাল মন্দ হটত্র্যাকার
নানান বিষয়ে
ভাবনার নিগূঢ় হয়ে

Scanned with CamScanner

নখ খুঁটছে
মাথায় ঘোমটা দেওয়া আলো।

সেখানে দাঁড়ালো
সারা অঙ্গে পাউডারের খড়ি মেখে
ভয় ভালবাসা লজ্জা
সমস্ত ঘচিয়ে
দুই বুকে তীক্ষ্ণ দুটি বল্লম উঁচিয়ে
প্রশ্নকাল।

(ख)

কোনো হ্রদে
কোথাও নদীর ঢেওয়ে
কোনো এক সমুদ্রের জল
পরস্পরে সাথে দূদন্ড জলের মতো মিশে
সেহট এক ভোরবেলা শতাব্দীর সূর্যের নিকটট
আমাদের জীবনের আলোড়ন–
হয়তো বা জীবনকে শিখে নিতে চেয়েছিলা।
অন্য এক আকাশের মতো চোখ নিয়ে
আমার এসেছি
আমরা খেলেছি
স্মরণীয় উত্তরাধিকারে কোনো গ্লানি নেহট ভেবে
একদিন ভালোবেসে গেছি।

4- निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए 10x7

(क)

Scanned with CamScanner

বাংলা ও পাঞ্জাবের মত জার্মানীও দু' টুকরো হয়েছে কিন্তু কলকাতা বা লাহোরের মত বার্লিন আর সেই আগের মত নেই। একটা নয়, দুটো নয়, চার চারটে টুকরো হয়েছে বার্লিন—ব্রিটিশ সেকটর, ফ্রেঞ্চ সেকটর, আমেরিকান সেকটর ও রাশিয়ান সেকটর। অ্যালায়েড ফোর্সেস-এর তিনটি সেকটর নিয়েই আজকের পশ্চিম বার্লিন ও রাশিয়ান সেকটর হচ্ছে পূর্ব বার্লিন। পশ্চিম বার্লিন বাহ্যত ও কার্যত মুক্ত হলেও আইনত আজও ইংরেজ-ফরাসী আমেরিকার অধীন। শহরটাকে চক্কর দিতে গিয়ে বার বার নজরে পড়বে, 'ইউ আর লি ভং ব্রিটিশ সেকটর, ইউ আর এন্টারিং ফ্রেঞ্চ সেক .র' অথবা 'আমেরিকান সেকটর।'

বিরাট ও বিচিত্র শহর হচ্ছে বার্লিন। বিংশ শতাব্দীর ইতিহাসে বার বার এর উল্লেখ। আয়তনে পূর্ব বার্লিনের চাইতে পশ্চিম বার্লিন কিছুটা বড়। দুটি বার্লিন একত্রে ওয়াশিংটনের সাড়ে তিনগুণ। আজকের পশ্চিম বার্লিনের আমেরিকান সেকটরই প্যারিসের চাইতে বড়।

দুটি জার্মানী, দুটি বার্লিন দিন-রাত্তিরের মত সত্য হলেও ভারতের সঙ্গে কূটনৈতিক সম্পর্ক আছে শুধু পশ্চিম জার্মানীর। পশ্চিম বার্লিনে আছে কন্সাল জেনারেলের অফিস। সেই কন্সাল জেনারেল অফিসে পলিটিক্যাল ডিপার্টমেন্টের প্রধান হতে চলেছে তরুণ।

সাধারণত কন্সাল জেনারেলের অফিসের দুটি কাজ। কনসুলার ও কমার্শিয়াল। অর্থাৎ পাশপোর্ট-ভিসা এবং ব্যবসা-বাণিজ্যের ব্যাপারে সাহায্য-সহযোগিতা করা। কোন কোন ক্ষেত্রে এর সঙ্গে থাকে প্রচার বিভাগ। বার্লিন যদি সানফ্রান্সিসকোর মত একটা বিরাট শহর ও ব্যবসা কেন্দ্র হতো, তাহলে ঐ দুটি-তিনটিই কন্সাল-জেনারেল অফিসের কাজ হতো। কিন্তু বার্লিন আন্তর্জাতিক রাজনীতির অন্যতম কেন্দ্রবিন্দু। পৃথিবীর দুটি বিবাদমান শক্তি এখানে মুখোমুখি। তাই তো শুধু পাশপোর্ট-ভিসা আর এক্সপোর্ট-ইম্পোর্টের

Scanned with CamScanner

কাজই নয়, কন্সাল জেনারেলের অফিসে কূটনৈতিক বিভাগটি অন্যতম প্রধান অংশ। তরুণ সেই গুরুত্বপূর্ণ পলিটিকাল ডিভিশনের প্রধান হতে চলেছে।

পূর্ব জার্মানীতে ভারতীয় কূটনৈতিক মিশন নেই, বার্লিনে নেই আমাদের দূতাবাস বা কন্সাল-জেনারেল। বিশ্বের অন্যতম প্রধান শিল্পসমৃদ্ধ দেশ পূর্ব জার্মানীর সঙ্গে ভারতের শুধু ব্যবসা-বাণিজ্যের সম্পর্ক। তাই তো আছে ট্রেড মিশন।

দ্বিধাবিভক্ত বাংলার বাঙালীর কাছে দ্বিখণ্ডিত বার্লিনের কাহিনী হাসির খোরাক যোগাবে। পশ্চিম বার্লিন পশ্চিম জার্মানীর অন্তর্গত নয়। তবে রাজধানী বনের চাইতে পশ্চিম জার্মানীর অনেক বেশী সরকারী কর্মচারী পশ্চিম বার্লিনে কাজ করেন। বার্লিন দু' টুকরো হলেও মিউনিসিপ্যালিটির কাজকর্ম একইভাবে চলছিল। মাটির উপরের রেল 'ইউ-বান' চালাত পূর্ব জার্মানী, মাটির তলার রেল 'ইউ-বান' চালাত পশ্চিম জার্মানী। প্রায় পঞ্চাশ হাজার পূর্ব বার্লিনবাসী প্রতিদিন চাকরি করতে আসত পশ্চিমে, বেশ কয়েক হাজার পশ্চিমের বাসিন্দাও নিত্য যায় পূর্বে চাকরি করতে।

বার্লিনের মজার কাহিনী আরো আছে। পশ্চিম বার্লিন থেকে যে বাইশ জন ডেপুটি বনে প্রতিনিধিত্ব করে, তাঁদের একজন তো পূর্ব বার্লিনেই থাকতেন। ভাবতে পারেন খুলনা বা বরিশালে বাস করে, কলকাতা থেকে নির্বাচিত হয়ে দিল্লীর পার্লামেন্টের সদস্য হওয়া? কলকাতার মত পূর্ব জার্মানীর থিয়েটারের মান বেশ উঁচু। পশ্চিম বার্লিনের বনেদি ও ধনী বা থিয়েটার রসিকের দল তাই রোজ সন্ধ্যায় পূর্ব বার্লিনে গিয়ে থিয়েটার দেখেন। আবার আমেরিকান খবরের কাগজ ও ম্যাগাজিন পড়ার জন্য আমেরিকান প্রচার দপ্তরের পৃথিবীর বৃহত্তম লাইব্রেরী—পশ্চিম বার্লিনের ইউ-এস-আই-এ-তে পূর্ব বার্লিনের হাজার হাজার কর্মী নিত্য আসেন।

এই বার্লিনে—পশ্চিম বার্লিনে এলো তরুণ। পশ্চিম বার্লিনের টেম্পেলহফ্ এয়ারপোর্টটি একেবারে শহরের মধ্যে। কলকাতার ওয়েলিংটন স্কোয়ারের মত না হলেও পার্ক সার্কাস আর কি! এয়ারপোর্টটিও বেশ অভিনব। মাঠের মধ্যে রানওয়ের ধারে বা টার্মিনাল বিল্ডিং থেকে মাইলখানেক দূরে প্লেনে ওঠা-নামা করতে হয় না। [redacted]

2.

'কবিতা' পত্রিকার সম্পাদনা শুরু করেন বুদ্ধদেব ১৯৩৫ সালে। এই সময় থেকে ১৯৪১ পর্যন্ত রবীন্দ্রনাথের নতুন বই বেরিয়েছে অন্তত তিরিশটি, আর তাঁর রচনাবলীরও কয়েকটি খণ্ড বেরিয়ে গেছে ওর মধ্যে। আজ 'কবিতা' পত্রিকার পুরোনো সংখ্যাগুলি হাতে পেলে আমরা দেখব, কতখানি বিনীত অনুরাগ নিয়ে নতুন এই বইগুলি বিষয়ে মন্তব্য করছেন সম্পাদক, মুহূর্তমধ্যে বরণ করে নিচ্ছেন প্রবীণ কবির প্রায় অলৌকিক প্রতিভাকে। গদ্যে আর পদ্যে এই শেষ ছ'বছরের মধ্যেও রবীন্দ্রনাথ যে বিন্যাসের পরীক্ষা করেছেন অনেক, তার কোনোটিই চোখ এড়িয়ে যায়নি বুদ্ধদেবের, সবকটি বিষয়েই তাঁর উচ্ছ্বাস শুনতে পাব আমরা 'কবিতা'র পাতায়, আর এর থেকে শিখতেও চেয়েছেন তিনি অনেকটা। তার মানে এই যে, রবীন্দ্রনাথের শেষপর্বের রচনাবলী তাঁর মনোযোগেরই বিষয় ছিল, সেটা তাঁর অভিজ্ঞতার বাইরের ব্যাপার নয়।

এও ঠিক যে 'পূরবী'র কবিতাগুলি তাঁর সদ্য-যৌবনকে মথিত করেছিল, এ-অভিজ্ঞতার বিষয়ে পরে একটি কবিতাও লিখেছেন তিনি; সপ্ততিতম জয়ন্তীর উৎসবে, তাঁর তেইশ বছর বয়সে, 'পূরবী'র সঙ্গে 'মহুয়া'কে মিলিয়ে নিয়ে মন্তব্য করলেন বুদ্ধদেব, 'এমন কবিতায় এমন একটি গভীর বিষাদ আছে যা সস্তা কারুণ্য নয়, যা [illegible] সুর।'

(গ)

পাখিদের মধ্যেও চাঞ্চল্য! অবাক হয়ে দেখল বুধিয়া, এখন আকাশে একটা পাখিও উড়ছে না! তারা গাছের ডালে বসে ইতিউতি তাকিয়ে শোরগোল করতে ব্যস্ত। অন্যান্য দিন একটা দুটো ধনেশ তো থাকেই। উড়ে বেড়ায় লাল টুকটুকে আলতাপরির ঝাঁক। অনেক উঁচু থেকে লাল রঙের একটা ঢেউ যেন নেমে আসে সবুজ অরণ্যের মাথায়। আবার হঠাৎই গোঁত্তা মেরে আকাশের দিকে উঠতে থাকে। বিশেষ করে বিকেল আর সন্ধ্যার ঠিক মাঝখানে, যখনই নিজের ছায়াটা পুব দিকে হেলে পড়ে, তখনই অগুনতি পাখির ঝাঁক নেমে আসে আকাশে। তাদের ডানার ঝাপটায় ব্যতিব্যস্ত হয়ে ওঠে গাছের মাথা!

অথচ আজ একটা পাখিও নেই!

গতিক খুব সুবিধের নয়। ঝড় উঠতে পারে। জোরালো হাওয়ায় দুর্বল ছাউনির কমজোরি বাধা টিকবে না। মাথার ছাতটুকুও থাকবে না। কী করবে ভেবে কূলকিনারা পায় না সে। একটু থিতু হয়ে বসতে না-বসতেই ঝড় আসতে হল! এ অরণ্যে বিপদের কি শেষ নেই! এই আপৎকালীন পরিস্থিতিতে আরও একবার নিজের গ্রামের কথা মনে পড়ে যায়। খড়ের চালা, ঝাপটাও যে খুব প্রতিরোধ করতে পারত, তা নয়। তবে সেখানে আপনজনরা আছে। যে বিপদই আসুক না কেন, সবাই একসঙ্গে লড়ে যায়! লোকবল থাকলে সাহসও আপনাআপনি বেড়ে যায়। কিন্তু প্রকৃতির সঙ্গে কি একা লড়াই করা সম্ভব?

বুধিয়া দেখল, আকাশ শুধু মেঘাচ্ছন্নই নয়, থেকে থেকেই ভয়াবহ বিদ্যুতের রেখা ঝলসে ঝলসে উঠছে। এ লক্ষণ মোটেই ভাল নয়! হাওয়ার ঝাপট ধীরে ধীরে বাড়ছে। কবরখানার শূন্য বুকে হু হু করে মাথা চাপড়ে মরে কারা! ঝরা পাতার মচমচানি যেন আর্তনাদ! নিঃসঙ্গ দুপুরের অলস মর্মরধ্বনি নয়। যেন কেউ পাতাগুলোর প্রাণ খিমচে ধরেছে।

পাহাড়ের চুড়োর নীল কুয়াশার মতো মেঘ থরে থরে চোঙের মতো নেমে এসেছে জঙ্গলের মাথা লক্ষ করে। তার সাজের ঘটা দেখে মেয়েটার বুক গুড়গুড় করে। আজ বুঝি প্রলয়ঙ্করী হয় প্রকৃতি মা! তার উন্মাদিনীর মতো আলুথালু চুল আকাশে উড়বে। যেখানে যা কিছু সুন্দর করে সাজিয়েছিল সব টেনে, ছড়িয়ে ধ্বংস করবে। বড় নিষ্ঠুর মা এই প্রকৃতি। সে অনেকদিন ধরেই বড় সুন্দর করে একটা মনভোলানো ছবি আঁকে। তারপর কোনও এক সময়ে নিজেই খেপে গিয়ে তার উপর ঢেলে দেয় একটা কালির বোতল!

দেখতে দেখতেই ঘনিয়ে এল ঝড়! হঠাৎ একটা কানফাটানো শব্দ! চমকে উঠল বুধিয়া! কী হল! বাজ পড়ল নাকি? এত কাছে!

কিন্তু এর মধ্যে দূর থেকে শিঙার শব্দ ভেসে আসছে। প্রায় সঙ্গে সঙ্গেই মাথার উপরে পাখিদের পরিত্রাহি চিৎকার! বনের ভিতর দিকে হুড়মুড় করে কাদের যেন ছুটে যাওয়ার শব্দ! বুধিয়া কৌতূহলে বনের দিকে দৌড়ল। একটা শাল গাছের পিছনে নিজেকে লুকিয়ে রেখে দেখল আর-এক অদ্ভুত দৃশ্য! কয়েকশো জ্বলজ্বলে চোখের ঢল প্রাণপণে দৌড়চ্ছে! আছে শুয়োরের পাল, হরিণ! তার পিছনে দৌড়চ্ছে একশৃঙ্গ! সচরাচর জলদাপাড়া বা গরুমারাতেই একশৃঙ্গ গন্ডার দেখতে পাওয়া যায়। কিন্তু মানুষের মতো ওরা তো আর অভয়ারণ্যের জমি ভাগ বাঁটোয়ারা করে নেয়নি। তার মধ্যেই হয়তো গোটা দুয়েক এসে পড়েছিল চাপড়ামারিতে। এখন পুরোপুরি দিশেহারা হয়ে দৌড়চ্ছে পশ্চিম দিকে! মূর্তি নদীর দিকে!

Scanned with CamScanner

(৫)

আমরা বারান্দার দিকে এগোলাম। আমাদের লক্ষ্য বারান্দার পূর্বপ্রান্তের শেষ ঘরটা। দরজা খোলা, ভিতরে খুব মিটমিটে একটা আলো জ্বলছে। অরুণিমার বর্ণনা অনুযায়ী, এই ঘরটা হৃষীকেশ চৌধুরীর হওয়া উচিত। বারান্দায় উঠতেই ঘরের ভিতর থেকে যন্ত্রসঙ্গীতের মৃদু আওয়াজ ভেসে এল। সরোদে পরিচিত হিন্দুস্থানি রাগের আলাপ। বারান্দায় উঠে আমরা দু'জনেই কয়েকমুহূর্ত সেখানে চুপ করে দাঁড়িয়ে রইলাম। দিব্যি লাগছিল। গ্রীষ্মের সন্ধে, মিষ্টি হাওয়া বইছে দক্ষিণ থেকে। চারপাশে আলো আর অন্ধকারের মায়াময় মিশ্রণ। সেকেলে বাড়ির নির্জন দরদালানে যেন দরবারি মেজাজ! আমি আলতো করে গলাখাঁকারি দিলাম। প্রায় সঙ্গে-সঙ্গেই যন্ত্রসঙ্গীত বন্ধ হয়ে গেল! ঘরের মধ্যে উজ্জ্বল আলো জ্বলে উঠল। পায়জামা-পাঞ্জাবিপরিহিত গৌরবর্ণ, সুদর্শন, পঞ্চাশ ছুঁইছুঁই যে-ব্যক্তি ভিতর থেকে বেরিয়ে এলেন, তিনি লম্বায় দীপেনের চেয়ে সামান্য খাটো। মাথায় একরাশ ঢেউখেলানো কাঁচা-পাকা চুল। মুখ পরিষ্কার করে কামানো। ভদ্রলোকের চেহারায়, বিশেষ করে ওঁর গভীর দু'টি চোখ এবং টিকলো নাকের জন্যই সম্ভবত, সহৃদয়তা এবং আভিজাত্যের মিশ্রণ চোখে পড়ার মতো। ভাল করে আলাপ হওয়ার আগেই হৃষীকেশ চৌধুরীকে আমার ভাল লেগে গেল! উনি হাতের চশমাটা চোখে দিয়ে বললেন, "আপনারা ভিতরে এসে বসুন।"

হৃষীকেশ চৌধুরীর ঘরের ভিতরটা ভারী সুন্দর করে গোছানো। প্রশস্ত বসার ঘরে সোফা, ডিভান, বইয়ের আলমারি, মাঝারি সাইজের শো-কেস, লেখাপড়া করার টেবিল-চেয়ার, টেলিভিশন ও সিডি প্লেয়ার রাখার ক্যাবিনেট ইত্যাদি সমস্ত আসবাবই কাঠের। দেখে মনে হয়, বেশির ভাগই পুরনো দিনের জিনিস। কিছু হয়তো রিমডেল করিয়ে নেওয়া। সোফাতে বসার পর অনুভব করলাম, সেটা যথেষ্ট আরামদায়কও বটে। মল্লিকবাড়ির অন্য আসবাব এ যাবৎ যা দেখেছি, সেগুলির সঙ্গে এগুলির আকার-প্রকারের ফারাক আছে। সবগুলিই দক্ষ ছুতোরের হাতের কাজ। কিন্তু এই ঘরের জিনিসগুলিতে শিল্পনৈপুণ্যের পরিমিত ও মার্জিত প্রয়োগ আলাদা করে চোখে পড়ে।

ঘরের দু'দিকের দেওয়ালে দু'টি পেন্টিং, দু' [illegible]নের। যেখানে বইয়ের আলমারি আছে, তার সঙ্গে উপযুক্ত দূরত্ব বজায় রেখে সেই দিকেরই দেওয়ালে সযত্নে টাঙানো আছে একটা পুরনো ধাঁচের অয়েল পোর্ট্রেট। অন্যদিকের দেওয়ালের অনেকটা অংশ অধিকার করে আছে আধুনিক কোনও শিল্পীর আঁকা একটা বড় ল্যান্ডস্কেপ। দরজার ডান পাশে দেওয়ালের কোণজুড়ে সাজানো রয়েছে হাল আমলের টিভি ও মিউজ়িক সিস্টেম। সরোদের টুং-টাং এটাতেই চলছিল বোঝা গেল। এককথায়, ঘরটা সুসজ্জিত। বসার ঘর হিসেবে প্রয়োজনীয় সব জিনিসই সেখানে আছে। অথচ কোনওটাই ভিড় করে নেই।

ইউরোপের সবচাইতে গরীব দেশ পর্তুগালে আইন আছে, রাজধানী লিসবনে সবাইকে জুতো পরতে হবে। পয়সা কোথায়? লিসবনে হাজার হাজার মানুষের জুতো কেনার সামর্থ্য নেই! তবুও জুতোর মতই একটা কিছু পকেটে নিয়ে ঘুরে বেড়ায় এই হতভাগ্য মানুষের দল। দূর থেকে পুলিশ দেখলেই পরে নেবে। আবার পুলিশ একটু দূরে চলে গেলেই খুলে পকেটে রেখে দেয়।

চোখ মেলে চারদিক দেখলেই এসব দেখা যায়, জানা যায়। টুরিস্টদের মত শুধু বাহ্যিক চোখের দেখাই ডিপ্লোম্যাটদের কাজ নয়। আরো অনেক কিছু দেখতে হয়, জানতে হয় এবং উর্ধ্বতন কর্তৃপক্ষকে জানাতে হয়। দশটা-পাঁচটার চাকরি করলে ডেপুটি সেক্রেটারীর দায়িত্ব শেষ হয়, কিন্তু কেনসিংটনে বা ফিফথ্ অ্যাভিনিউতে ককটেল পার্টিতে গিয়ে ছ' পেগ আট পেগ হুইস্কী খাবার পরও ডিপ্লোম্যাটকে সতর্ক থাকতে হয় গোপনে খবর জানার জন্য। হাজার হোক ডিপ্লোম্যাটরা মর্যাদাসম্পন্ন ও স্বীকৃত গুপ্তচর ছাড়া আর কিছুই নয়। ফ্রেণ্ডশিপ, আণ্ডারস্টাণ্ডিং শুধু বুকনি মাত্র। ক্লোজ কালচারাল টাইস্ তেল দিয়ে খবর যোগাড় করার কায়দা মাত্র। অন্যান্য দেশের মতিগতি বুঝে নিজের দেশের সুবিধা করে দেওয়া অর্থাৎ স্বার্থরক্ষাই ডিপ্লোম্যাসীর একমাত্র ধর্ম। এসব কথা সারা পৃথিবীর সমস্ত ডিপ্লোম্যাটরা জানেন। ইণ্ডিয়ান ডিপ্লোম্যাটরাও জানেন।

সব জেনেশুনেও চলেছে এই লুকোচুরি খেলা। এক-এক দেশে এক-এক রকমের লুকোচুরি খেলা চলে। মস্কো বা ওয়াশিংটনের যে কোন ডিপ্লোম্যাটিক মিশনে যান। দেখবেন, কেউ কোন ঘরে বসে গুরুত্বপূর্ণ আলোচনা করছেন না। বাইরে বরফ পড়ছে, তবু পরোয়া নেই। ভেতরের গার্ডেনেই কথাবার্তা হবে। কেন? কেন আবার, জুজুর ভয়। কোথা দিয়ে কে সব কিছু টেপ রেকর্ড করে নেয়! আজকাল তো পয়সা দিলেই ওয়াচ রেকর্ডার পাওয়া যায়। ডিপ্লোম্যাটদের পিছনে টিকটিকি ঘোরাঘুরি করেই। টেলিফোনে কথাবার্তা নিরাপদ নয়। বড় বড় দেশের অনেক সামর্থ্য, কত কিছুই তারা করতে পারে। কিন্তু ঐ ছোট্ট দেশ আফগানিস্থান!

(৫৩)

জীবননদীর ধারা বয়ে চলেছে যুগ-যুগান্ত ধরে। সময় হল তার স্রোত। সময়ের চলার ছন্দে তৈরি হয় ইতিহাস। আজ যা বর্তমান, কাল তা ইতিহাসের পাতায় ঠাঁই পায়। এই ইতিহাসের অদৃশ্য রূপ কালের খাতায় লেখা হয়ে থাকে, তাকে খুঁজে বের করেন মহান গবেষকেরা। তেমনই এক তরুণ গবেষক বিক্রম সম্পত। এই প্রতিভাবান তরুণ পেশায় একজন ইলেকট্রনিকস বিশেষজ্ঞ এবং উচ্চপদে কর্মরত। এছাড়াও নিয়মিত সংগীতের তালিম নিয়ে থাকেন। তাঁর গবেষণালব্ধ এক অসাধারণ কর্ম, তাঁর লেখা 'মাই নেম ইজ় গওহরজান'। আলোচ্য গ্রন্থটি তারই বাংলা অনুবাদ।

অ্যারিস্টটল বলেছেন, 'ইতিহাসের শিল্পসম্মত উপস্থাপনা সত্য ইতিহাস লেখার চেয়ে অনেক বেশি বৈজ্ঞানিক ও হৃদয়স্পর্শী'— বিক্রম ঠিক এই কথাটি মনে রেখেই ফুটিয়ে তুলেছেন এক অনন্যসাধারণ সংগীতশিল্পীর ঐতিহাসিক জীবনী, যা পড়তে গেলে যে-কোনও সংগীতরসিক পাঠক অতিশয় রোমাঞ্চ বোধ করবেন।

শৈশব থেকেই গওহরজানকে বেঁচে থাকতে

Scanned with CamScanner

(১৫)

হয়েছে অত্যন্ত দারিদ্র ও কষ্টের সঙ্গে লড়াই করে এবং এক অনিশ্চিত ভবিষ্যতের দিকে তাকিয়ে। এ যেন ঠিক সূর্যোদয়ের আগের অন্ধকার মুহূর্ত! আবার তাঁর জীবনে হয়েছে সূর্যোদয়, ক্রমে ক্রমে জীবন হয়েছে আলোকিত। আবার সেই সূর্য যেমন দিনশেষে অস্তমিত হয়ে আসে, তেমনভাবেই তাঁর জীবনের রং ধীরে-ধীরে হারিয়ে গিয়েছে কালের দিগন্তরেখায়। তাঁর জীবনকাহিনি রয়ে গিয়েছে সময়ের ঘরে, ইতিহাস হয়ে।

বইটি শুরু হয় ফ্ল্যাশব্যাকের মাধ্যমে, যখন গওহর জীবনের শেষ প্রান্তে এসে মহীশূরে বসবাস শুরু করেন সেখানকার রাজদরবারের গায়িকা হয়ে। লেখার প্রসাদগুণে মনে হয় যেন

একটি উপন্যাস পড়তে শুরু করলাম। বিভিন্ন অধ্যায়ে বইটিকে ভাগ করা হয়েছে এবং প্রায় প্রতিটি অধ্যায় শুরু হয়েছে বিভিন্ন কবির লেখা শের এবং তার বঙ্গানুবাদ দিয়ে, যা পাঠকের মনে এক নতুন রস সঞ্চার করবে। এই শেরগুলির মধ্যে বেশ কয়েকটি বড়ি মলকাজান-এর লেখা, যিনি ছিলেন গওহরের মা। এর পরের অধ্যায়ে লেখক চলে আসেন সরাসরি ইতিহাসে— ঘটনার শুরু উত্তরপ্রদেশের আজমগড় শহরে। তার বিস্তারিত ঘটনার মাধ্যমে আমরা জানতে পারি গওহরজানের জন্মবৃত্তান্ত এবং তাঁর ও তাঁর মায়ের প্রবল সংগ্রামের কাহিনি।

গওহরের শরীরে ছিল ব্রিটিশ রক্ত।

2.

Scanned with CamScanner

(গ)

MTT-003, Q4-H

উনিশ শো আটচল্লিশ সালের আটাশে জুলাইয়ের মধ্য রাত। বাইরে টিপ্ টিপ্ করে বৃষ্টি পড়ছে। একটু আগে দূর প্রান্তের উদ্দেশে উড়ে গেছে একখানা বিমান। এয়ারপোর্ট'র লাউঞ্জ প্রায় ফাঁকা। শেষ রাতের বিমানে ওঠবার জন্যে কয়েকজন যাত্রী লাউঞ্জের ডেক-চেয়ারে আপাদমস্তক ওভারকোটে ঢেকে শুয়ে আছে। নাইট ডিউটির কয়েকজন বিমানকর্মী নিঃশব্দে চলা-ফেরা করছে।

এয়ারপোর্টের রানওয়ের ওপর আর কোন বিমান নেই। দূরে হ্যাঙ্গারের কাছে একখানা বিমানের লেজের কাছের লাল আলো ঘন কুয়াশা ভেদ করে অস্পষ্ট দেখা যাচ্ছে। এয়ারপোর্টের উঁচু টাওয়ারের আলোর রশ্মি বৃত্তাকারে ঘুরে ঘুরে জানাচ্ছে সংকেত। আর এয়ারপোর্টের গুদামঘরে যথারীতি পাহারা দিচ্ছে তিনজন সিকিউরিটি গার্ড। একটু আগে ডিউটি আরম্ভ হয়েছে ওদের।

গোটা এয়ারপোর্ট জুড়ে স্বাভাবিক অবস্থা। অস্বাভাবিকত্বের চিহ্ন নেই কোথাও। মাত্র কিছুক্ষণ পরেই যে সেখানে একটা ভয়ানক নাটকের অভিনয় হতে চলেছে তার কোন চিহ্নই নজরে পড়বে না বাইরে থেকে।

কিন্তু তাই বলে প্রস্তুতির অভাব নেই ফ্লাইং স্কোয়াড্ মহলে। গুদামঘরের কাস্টমস-এর লোকজনেরা আজ অনুপস্থিত। ঊর্ধ্বতন কর্তৃপক্ষের নির্দেশ তাদের আজ সরে যেতে হয়েছে অন্যত্র। কিন্তু কেন সরে যেতে হলো তার কারণ তারা নিজেরাও জানে না।

পোশাক পরা তিনজন সিকিউরিটি গার্ড যথারীতি পাহারা দিচ্ছে সেই সিন্দুক। তাদের একজনের পকেটে স্ট্রংরুম ও সিন্দুকের চাবির গোছা।

Scanned with CamScanner